नॉर्वे की म्योसा झील के किनारे बसा हुआ शहर लिल्येहामर। हम लोग वहाँ एक गोष्ठी के लिए जमा थे। यहाँ की गर्मियाँ ऐसी थीं कि हम एक-दूसरे से गरम कपड़े माँग रहे थे। एक दोपहर अच्छी धूप देख मैंने सोचा नॉर्वे के मशहूर मानव-सँग्रहालय "माइहाउगेन" को भी देख ही आना चाहिए।

माइहाउगेन का वो म्यूज़ियम...

तेजी ग्रोवर

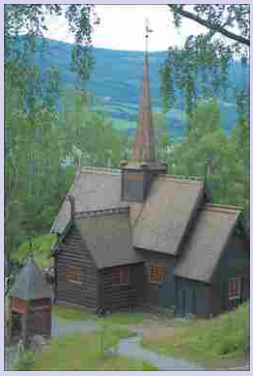

बड़ी ठण्डी धूप थी। कहने को गर्मियाँ थीं लेकिन अपने देश की गर्मी की याद बराबर बनी हुई थी। माइहाउगेन का म्यूज़ियम बाहर खुले में था। इसमें पिछली सदियों की जीवन-शैलियों के नमूने सहेज कर रखे हुए थे।

जैसे ही मैंने टिकिट खरीदा तुरन्त एक प्यारी-सी लड़की मेरे पास आकर खड़ी हो गई। "क्या आप चाहेंगी मैं आपको म्यूज़ियम दिखाऊँ।" उस लड़की की पोशाक लगभग दो-ढाई सौ साल पहले इस इलाके में पहनी जाने वाली पारम्परिक ट्यूनिक थी जिस पर बहुत सुन्दर कढ़ाई थी। मैं खुश होकर उसके साथ हो ली। फाटक पार करते ही हम लोग साँय-साँय करते पेड़ों की धूप-छाँव और पक्षियों के कलरव से घिरी हुई एक ऐसी विशाल जगह में प्रवेश कर चुके थे जहाँ कुछ भी "आधुनिक" नहीं था। यानी नॉर्वे में जनजातियाँ कैसे रहा करती थीं, अब केवल माइहाउगेन जैसे म्यूज़ियमों से ही पता चलने वाला था।

नीली कढ़ाईदार ट्यूनिक पहने उस लड़की का नाम इंगरिड था। वह मुझे लकड़ी के कत्थई-लाल घरों के भीतर ले गई। वहाँ उसने अपने पुरखों के जिए हुए जीवन के मुझे दर्शन कराए। बड़े-बड़े बर्तन-भाँडे, मेज़, स्टूल, मिट्टी के बने पलंग, और बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ जिनसे छनकर रोशनी भीतर आती थी। पानी कम था इसलिए रोज़ नहाना नहीं होता था – साल में बस दो-एक बार। एक कोना था, जहाँ खेत आदि से आने वाले खाने की मेज़ पर बैठने से पहले मुँह-हाथ धोते थे, ज़रा-से पानी से।

एक घर ऐसा था, हेनरिक नाम के एक किसान का, जो लकड़ी की कंघियों से भरा था। करीब चार सौ साल पहले नॉर्वे में कई जगह यह प्रथा थी कि लड़के को पसन्द करने से पहले लड़की उसके हाथ की बनी लकड़ी की कंघी को देखती थी। अगर पसन्द आ जाती तो वह उससे ब्याह करने को राज़ी हो जाती। अगर नहीं तो वह बेचारा नई कंघी बनाकर फिर कोशिश करता। हेनरिक सारी उम्र कुँवारा रहा क्योंकि वह कभी ऐसी कंघी नहीं बना पाया जो किसी लड़की को पसन्द आई हो।

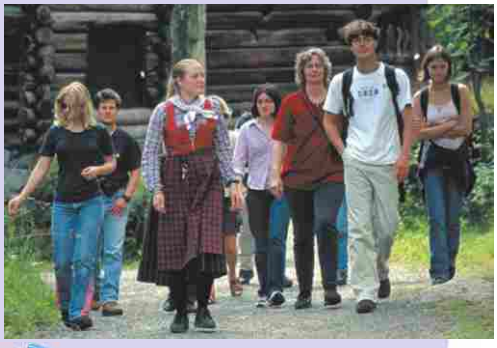

इंगरिड वहाँ खड़ी-खड़ी हेनरिक की बनाई कंघियों को एक-एक कर मुझे दिखा रही थी। जैसे वह खुद लड़के को पसन्द करने आई हो। इंगरिड की पोशाक भी ऐसी थी जैसे...

मई के दिन नॉर्वे के राजा और रानी स्वतंत्रता दिवस की बधाई देने अपने महल की बालकनी में पूरा दिन खड़े होकर शाही बागीचों में देश-भर से जुटी हुई भीड़ का स्वागत करते हैं। सभी लोग अपने-अपने प्रदेश की पारम्परिक पोशाक पहनकर आते हैं, जैसी इंगरिड ने पहन रखी थी। आज के ज़माने में हाथ की कढ़ाई वाली ऐसी पोशाक बनवाना नॉर्वे में लगभग नामुमकिन है। इसलिए नॉर्वे में बसे पाकिस्तानी लोग अपने पुश्तैनी गाँवों से ये पोशाकें नॉर्वीजी लोगों के लिए तैयार करवाकर लाते हैं। क्या पता जो ट्यूनिक इंगरिड ने पहन रखी थी वह पाकिस्तान के किसी गाँव में बनी हो! ताज्जुब की बात थी कि इंगरिड की ट्यूनिक मुझे उस शॉल की याद दिला रही थी जो मेरी माँ ने अपनी शादी के लिए करीब तीन साल में काढ़ा था। मेरा मतलब है कि लिल्येहानर और पठानकोट की गुलकारी में इतनी मिलनसारी!

इंगरिड ने मुझे एक चीज़ बड़े उत्साह से कई फार्म हाउस में दिखाई। वह था दूध दुहते समय बैठने वाला स्टूल। अपने झोले से उसने एक स्कार्फ निकाला। उसे पहना और स्टूल पर बैठकर एक काल्पनिक गाय को दोहने का अभिनय करने लगी। जिस देश की गाएँ ठण्डे, निर्जीव कमरों में मशीनों द्वारा ही दुही जाती हैं, उसी देश की एक भली-सी लड़की दिन में कई बार दूध दुहने का अभिनय करके खुद को खुश रखने की कोशिश करती है। उसके लिए दूध दुहने वाला स्टूल किसी चमत्कार से कम नहीं था, जिसे वह दिन में दो-तीन बार किसी से साझा करती है, शान से दिखाती है।

गाय दुहकर वह उठी और सामने वाले एक फार्म-हाउस की ओर इशारा करके बोली, "इस घर में रहने वाले अभी तक वैसा ही जीवन जी रहे हैं।" इंगरिड कहने लगी कि अगर हम लोग बिल्कुल चुपचाप भीतर चले जाएँ तो उनसे बात किए बिना उनकी जीवन-शैली देख सकते हैं। मैं कुछ समझ नहीं पाई – आधुनिकता से पूरी तरह लैस एक अमीर देश में तीन-चार-पाँच सौ साल पहले जिए गए जीवन की झलक? जिस देश में नाम-मात्र की कृषि हो रही हो, वहाँ एक किसान परिवार म्यूज़ियम परिसर में रहकर पारम्परिक जीवन जी रहा है भला यह कैसे हो सकता है? मैं चुपचाप, ठगी-सी इंगरिड के साथ उस खूबसूरत फार्म-हाउस के भीतर चली आई। दोपहर के भोजन का समय था और एक आदमी मुँह-हाथ धो रहा था। ट्यूनिक पहने एक स्त्री मेज़ पर शोरबा रख देने के बाद बड़ी-सी काली कढ़ाई में खौलते द्रव्य को लकड़ी के चम्मच से चला रही थी। एक और थकाहारा किसान खाने को बैठ गया था। इंगरिड मुझे चुपचाप घर में रखी कई चीज़ें और औज़ार दिखाने लगी। इस बीच मेज़ के गिर्द बैठे वे तीनों लोग बातचीत करते हुए बीच-बीच में ठहाके लगा रहे थे। चमड़ी सभी की कुछ-कुछ सुर्ख और खुरदुरी थी जैसे वे खूब चिटकी हुई धूप में काम करके लौटे हों। किसी के घर में यूँ घुसकर उन्हें देखना मुझे बहुत अजीब लग रहा था। बाहर निकलकर मैं इंगरिड की ओर सवालिया निगाहों से देखने लगी। अपने यहाँ तो हम लोग ग्रामीण और आदिवासी जीवन का स्पर्श पाना चाहें तो हमें किसी म्यूज़ियम में नहीं जाना पड़ेगा। लेकिन यहाँ यह हो क्या रहा है, और मैं इस कदर हैरान क्यों हो रही हूँ? इंगरिड मुस्करा रही थी। वह मेरे असमंजस को दूर करने की गर्ज़ से बोली, "वो जो तीन कारें खड़ी हुई हैं न मेपल के पेड़ के नीचे, वे इन्हीं लोगों की हैं। जब म्यूज़ियम बन्द हो जाएगा, वे लोग अपना मेकअप पोंछ देंगे और अपने कपड़े पहनकर घर चले जाएँगे।"

फोटो: इंटरनेट से साभार ली गई हैं।